

## Transcript of Zoom Meeting at 5.00 pm on August 13, 2025

This transcript still has some machine-made mistakes. But a large devanagari part is mostly corrected.

- Girish

### Girish Sahasrabudhe:

We can .. we can ... pick up the thread from last time. दो स्टार्टिंग पॉइंट थे ... I had ... sent another document with some, more ... evidence about the kind of thing GSRK was talking about last time. We can come to that also, but maybe we can start with ... विजय जी आप कुछ अपनी बात कहेंगे? There was a ... WhatsApp वो ... उसपे सवाल डाला था सुनील जी ने वह सवाल बेसिकली यह था कि ये जो पिछली बार ... दो बार से बात हो रही है ... GSRK रख रहे थे उसको ... कि ये फिस्कल अरेंजमेंट्स जो थे, ब्रिटिश लोग आने से पहले वो बहुत अलग किस्म के थे और आपने आप शायद एक सेशन में तो थे कि उसमें ऐसा होता था कि जो टैक्स का जो एक तो उसकी मात्रा बहुत कम थी। अंग्रेजों के आने के बाद में वह आधी ... आधा हो गया टैक्स फसल के ... उसके पहले कुछ ... काफी काम हुआ करता था। पंद्रह परसेंट बीस परसेंट ऐसा कुछ है और वो भी वो सिस्टम कुछ ऐसा था कि उसमें कुछ लैंड्स के लिए कुछ लैंड्स जो थे वो मन्यम लैंड्स कहलाते थे... या इनाम लैंड्स तो इनका पर्पस यह था कि वहां पे जो कुछ वहां पे जो सर्विस देने वाले लोग हैं गांव में, या सरकारी मुलाजिम हैं, तो उन लैंड्स वो लैंड्स उनको दिए जाते थे या फिर मंदिरों को दिए जाते थे ... तो उसका जो रेंट है वह सेंट्रल एक्सचेकर में नहीं जाता था वह विलेज में ही रहता था और वहीं पे वो डिस्ट्रीब्यूट हो जाता था। एक तो यह उसका आस्पेक्ट था। दूसरा यह था कि टोटल टैक्स बहुत कम था। तीसरा यह था कि जो टैक्स था भी उसमें से भी कुछ टैक्स और ऐसा था जो लिया नहीं जाता था जो वहां नहीं जाता था। एक्चुअली तो मन्यम में ... उसमें आता होगा। वो नोशनल टैक्स था। ऐसा धरमपाल जी का कहना था। कि वो टैक्स के नाम से था लेकिन वो एक्सचेकर में नहीं जाता था। वो वही पे यूटिलाइज होता था। कुछ यह दूसरा आस्पेक्ट और तीसरा आस्पेक्ट बंटवारे का था फसल के ... कि के बंटवारे के सिस्टम कैसी थी ... एक तो कटाई के बाद तुरंत कुछ लोगों के राइट्स होते थे तो उनको बंटवारा वहीं हो जाता था ... और फिर उसके थ्रेशिंग के बाद में होता था कुछ गहाई जिसको कहते हैं खलिहान में जाने के बाद में वहां से कुछ होता था वगैरह वगैरह। तो ये सिस्टम पूरा एक वो बड़े इससे चलता था ... मतलब सुचारु रूप से जिसको कहेंगे ... सब्जेक्ट की बात कर रहे जिसकी। तो जो सेंट्रल एक्सचेकर में चीजें जाती नहीं थी। यहीं पर उसका बंटवारा बहुत शव हो जाता था और उसके सारे कंट्रोल और उसके अगर कोई डिस्प्यूट होता है तो उसका रेजोल्यूशन यह सब लोकल ही होता था और किस तरीके से होगा यह भी लोकल ही तय ... वगैरह वगैरह।

ऐसे काफी उसके आस्पेक्ट है जो मॉडर्न दुनिया में कहीं भी नहीं है। बिल्कुल नहीं है मतलब। तो स्वराज के तर्क में यह चीजें कैसे उठाई जा सकती है? इस दृष्टि से उस पर बातचीत चल रही थी कि बहुजन समाज में समाज इसको कैसे रिस्पॉन्ड करेगा। सुनील जी ने जो सवाल किया था वह था कि जो फिजिकल अरेंजमेंट थे जिस तरह का सिस्टम चलता था उस समय क्या जो किसान आंदोलन में जो मांगें होती हैं, उनके पीछे कुछ उस तरह का मनी सप्लाई हो ... आज के इसमें ... आज की भाषा में ... या फिस्कल अरेंजमेंट हो उस तरह की ... ऐसा कुछ उसके पीछे उसकी भावना है क्या ... जब आंदोलन हो रहा है? तो ये था तो मैंने उसपे ये लिखा था कि आप वो हमेशा ये बात करते हैं मौनेटरी पॉलिसी की और यह बात कहते हैं कि गांवों में ज्यादा पैसा आना चाहिए। कृष्णराजुलू ने लिखा था कि यह सिस्टम ... पॉलिटिकल इकोनॉमी से ये तर्क नहीं आता है .. ये कुछ धार्मिक बात है .. सिस्टम है। ऐसा कुछ लिखा था उन्होंने। तो आप उस पर कुछ अपना ये दे उसको .. अपना मत दें कि ऐसा कुछ ... आपने तमाम जो उस समय के अस्सी के भी आंदोलन देखे हैं, कृष्णराजुलू ने लिखा था कि रयत संघ के इसमें यह भावना थी कि वो due है एक

तरह से यहाँ ... और आप उसको उठा के नहीं ले जा सकते ... ये explicit नहीं था लेकिन इस प्रकार कि भावना थी उसमें ... तो आप कहें कुछ इसपर ...

### Vijay jawandhia:

मुझे सच में यह जीएसआरके ने जो कहा है ना वो मुझे थोड़ा सा पढ़ने में बहुत अच्छा लगेगा ज़रा उसको समझने भी अच्छा लगेगा। पर तो आप जो बात कह रहे हैं ना मुझे प्री-ब्रिटिश का तो मैं नहीं समझ सकता... पर मुझे लगता है कि पोस्ट-ब्रिटिश में लैंड रेवेन्यू ये सरकार की बहुत बड़ी कमाई का साधन था। और उस समय लैंड रेवेन्यू हमें नहीं देना यह बहुत बड़ा आंदोलन होता था। इसलिए बल्लभ भाई पटेल ने बारडोली का आंदोलन किया था ... वह वायदा नहीं देने का आंदोलन था क्योंकि उसका सरकार की तिजोरी पर बहुत बड़ा असर होता है। अब यह हो गया है कि लैंड रेवेन्यू नगण्य हो गया है ... और मैं जो मॉनिटरी पॉलिसी की बात करता हूँ, मैं नहीं करता हूँ, शायद विनोबा जी ने भी उस समय यह कहा था जो लैंड रेवेन्यू है वह अनाज ही लिया जाना चाहिए, नकदी में नहीं लिया जाना चाहिए कि किसानों के पास में नकदी ज्यादा आता नहीं है तो वो अमाज देकर लैंड रेवेन्यू की पूर्तता कर सकते हैं ... तो इसको कहीं जोड़ना पड़ेगा हमको। अब वो कैसा जोड़ा जा सकता है जा सकता है, यह तो कोई इकोनॉमिस्ट ही बता सकता है। परंतु अभी जो है अभी अभी पूरा जो मनिप्युलेशन ... जो विनोबा ने ... मैं जो विनोबा जी का सेंटेंस ही कोट करता हूँ ... तो उन्होंने कहा था, पैसा लफंगा है। तो सुनील ने भी जो सवाल मॉनिटरी पॉलिसी के बारे में किया है, मुझे ऐसा लगता है कि यहां यह समझना होगा कि पैसे का मॉनिटरी पॉलिसी का जो मैनेजमेंट है वो किस तरह से और ज्यादा ज्यादा लूट बढ़ाते जा रहा है। इसी में कहीं तो भी ये एड्थ पे कमीशन का बोझा कितना आएगा यह किसी ने लिखा है कि... तीन लाख करोड़ रुपया कुछ तो भी बाजार में आएगा... एड्थ पे कमीशन के बाद में और वो तीन लाख करोड़ रुपए जो ज्यादा के आएंगे वो कहां जाएंगे ... वो कहां जाएंगे? शेयर बाजार में कितने जाएंगे? कारें खरीदने में कितने जाएंगे? फ्रीज और ये सब खरीदने में कितने जाएंगे ये सब उन्होंने दिया है ... और यह ... उन्होंने यह भी एक उसमें लिखा है मेरे खयाल से... कि सिक्स्थ पे और सेवंथ पे कमीशन का अगर अध्ययन करें तो इस तरह से ही गया है। फ्लैट की कीमतें बढ़ी है। फ्लैट खरीदने की बढ़ी है ... तो अगर यह एक्सेट किया जाता है कि पे कमीशन के माध्यम से ज्यादा पैसा एक वर्ग के हाथ में दिया तो वह इकोनॉमी को पुश करता है और वह पैसा वापस सिस्टम में आता है जिससे इकोनॉमी का चक्र शुरू होता है में यह क्यों नहीं मान्य किया जाता है कि किसान के पास में ज्यादा पैसा दिया जाए गांव के मजदूरों के बस में ज्यादा पैसा दिया जाए तो वह भी सिस्टम में आएगा। मुझे लगता है कि शेतकरी संघटना ने के बहुत ही सरलता से यह बात कही थी कि आज एक धोती और एक साड़ी पर रहने वाला जो वर्ग है वो अगर दो धोती और दो साड़ियां खरीदने की क्रय शक्ति में आ जाए तो कितने करोड़ धोतियां और कितनी करोड़ साड़ियां लगेगी और उससे कितना बड़ा टर्न-ओवर बढ़ेगा और कितना रोजगार बढ़ेगा। तो मुझे ऐसा लगता है कि इसमें बहुत कॉम्प्लिकेशन नहीं है। बिल्कुल यह मॉनिटरी पॉलिसी का ही सवाल है और मॉनिटरी पॉलिसी को किस तरह से मैनेज किया जा रहा है कि ज्यादा से ज्यादा पैसा ये कुछ मुट्टी भर लोगों के हाथ में इसलिए, आपको याद होगा कि मैं एक और बात कहता हूँ कि कर्जा लो और वस्तु खरीदी करो, कर्जा लो लो फ्रिज खरीदो, कर्जा ले कर जाओ माइक्रोवेव खरीदी करो, कर्जा लो एसी खरीदी करो। ये जो व्यवस्था है फ्री मार्केट की और 1991 के लिबरला, प्रायवेटाइज़ेशन, ग्लोबलाइज़ेशन की ... इसमें तो बिल्कुल साफ रूप से ये किया है कि जो पैसा दिया है पे कमीशन के माध्यम से और कर्ज लेने के माध्यम से जो मनी सप्लाई बढ़ा है वो वहीं के वहीं खेला जा रहा है और दूसरी तरफ हम इन लोगों के किचन एक्सपेंसेस कम रहे ताकि यह इंस्टॉलमेंट भर सके। इसलिए फिर गांव वालों को मार रहे हैं। उनके वेजेस को ही मार रहे हैं। उनके फसलों के दाम को यह मार रहे हैं ... और वह स्थिति यहां तक के आ गई है कि अब पचासी करोड़ लोगों को पांच किलो मुफ्त अनाज दिया जाना है ... अब पांच किलो मुफ्त अनाज देने में कोई हरकत नहीं है, तो ये पांच किलो मुफ्त अनाज देने के लिए आज जो सब्सिडी की ढोल बजाए जा रहे हैं कि डेढ़ लाख करोड़ की सब्सिडी है ... और थोड़ा इसका भी अध्ययन होना चाहिए क्यों स्वामीनाथन आयोग के सी टू प्लस फिफ्टी परसेंट के हिसाब से गेहूं और चावल खरीदा जाए और फिर ये पांच किलो मुफ्त अनाज दिया जाए तो सब्सिडी का बजट कितना होगा? क्यों उतना पैसा गांव में ही आने

वाला है तो इससे फिर कोई हमारी मांग हो जाती है कि गांव में पैसा का प्रभाव बढ़ रहा है। इसके कारण तरह से जोड़ा जा सकता है। मुझे लगता है कि उसके भी हमको कुछ काम करना चाहिए। ऐसा मुझे लग रहा है और यह बात तो बहुत साफ हो गई है कि आठवें वेतन आयोग के बाद जो कुछ भी अभी रोज चर्चा आ रही है, रोज अलग अलग यूट्यूब पर आ रहे हैं वो बिल्कुल पूरी हो रही है। कि ये ये होगा? अच्छा तीन लाख करोड़ रुपए से ज्यादा नहीं आने वाले हैं। सेंट्रल गवर्नमेंट के तीन लाख करोड़ रुपए आने वाले हैं और दूसरी तरफ राज्य सरकारों के कर्मचारियों को भी हेल्थ पे कमीशन की जो हाइक मिलने वाली है उसकी तुलना में उससे यह अंदाजा है कि सात से आठ लाख करोड़ से ज्यादा रुपए से ज्यादा रुपए बाजार में आएंगे और यह ज्यादा बोझा यह जो है यह सरकार लेगी तो मेरा उस पर काउंटर यह है कि अगर इसके लिए आर्टिकल लिखा कि आठवें वेतन पर तो चर्चा चल रही है। और स्वामीनाथन का जो पहला किसान-मजदूर आयोग है, उसकी चर्चा नहीं है और उसकी रिस्पॉसिबिलिटी लेने को तैयार भी नहीं है। तो अगर चार पांच करोड़ सरकारी कर्मचारियों के लिए आठ लाख करोड़ रुपए का बोझा लिया जा सकता है तो बारह करोड़ किसानों के लिए दस बारह लाख करोड़ रूपये का कर्जा सी टू प्लस फिफ्टी परसेंट देने के लिए लिया तो कौन सा आसमान टूटने वाला है? मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है। इतना ही होगा कि रुपये का अवमूल्यन होगा तो मुझे लगता है कि इसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है। मैं आज ही कहीं पर एक सुन रहा था कि चीन ने जो अमेरिका से समझौता शुरू किया है, ट्रेड के डील में ... और जो अमेरिका ने टैरिफ लगाया है तो चीन अपने यहां की कॉस्ट ऑफ प्रोडक्शन भी कम करने की कोशिश करेगा उसको absorb करने के लिए और थोड़ा युआन का डिवाॅल्यूशन करके भी उसको absorb करने की कोशिश करेगा मतलब क्या हो गया कि अगर ट्रंप के टैरिफ को उत्तर देना है कि आपके करेंसी को थोड़ा डिवाॅल्यूएशन करना पड़ेगा। तो जब ये डिवाॅल्यूएशन करोगे तो मनी सप्लाई उस तुलना में विलेज इकोनॉमी में बढ़ना पड़ेगा और नहीं बढ़ेगा तो वह भी मारे जाएंगे। मुझे लगता है कि यह सब किस तरह से रिलेट किया जाएगा। यह कोई इकोनॉमिस्ट ही हमको समझा सकता है।

**Girish Sahasrabudhe:**

हां, सुनील जी बोलिए।

**Sunil Sahasrabudhey:**

नहीं विजय जी जो बात कह रहे हैं उससे तो हम लोग शुरू से ही सहमत हैं। यहां बैठे हुए ज्यादातर लोगों की ... और किसी को कुछ अलग अलग लगता हो तो वह कहेगा ... हमारी तो अंडरस्टैंडिंग यही है जो विजय जी कह रहे हैं। हम यह सवाल नहीं उठा रहे हैं, लेकिन जीएसआरके ने जो कहा है उसके बारे में एक दूसरा सवाल उठा रहे हैं। इकोनॉमिक्स का सवाल हम नहीं उठा रहे हैं। हालांकि फिस्कल पॉलिसी की बात की गई है। सवाल यह है कि फिस्कल पॉलिसी जो उस वक्त थी उसके चलते आप एक अगर दूसरा टर्म coin करें ... प्रॉपर्टी के रिलेशन ... प्रॉपर्टी रिलेशनशिप यह टर्म है जिसका हम use करते हैं... बहुत लंबे समय से रिलेशनशिप प्रॉपर्टी, हम रिलेशनस ऑफ प्रॉपर्टी की जगह रिलेशनस ऑफ ... रिलेशनस ऑफ फिनांशियल स्ट्रेंथ ... या उसको फिनांशियल स्ट्रेंथ कहिए या किसी ढंग से कंपोजिट यह होना होगा ... मीटर होना होगा जो असेट्स, इंटरैस्ट, फिनांशियल मार्केट की फिनांशियल स्ट्रेंथ ये वो सब मिलाकर के एक कंपोजिट मीटर होना होगा ... सिर्फ प्रॉपर्टी से नहीं तय होता है। प्रॉपर्टी से तय होता है, मार्केट में स्पेंड करने की कैपेसिटी सतह तय होता है... मार्केट में एंटी की कैपेसिटी से तय होता है ... बहुत सी चीजों से मिलकर के वो मीटर तय होता है। तो हम यह कह रहे हैं की सेंट्रल क्लेशन जिसको एड्रेस कर रहे हैं... इस कॉन्टेक्ट में वह है स्वराज कॉन्शसनेस का। हम यह कह रहे हैं कि किसान आंदोलन एक स्वराज कॉन्शसनेस एक्जिबिट कर रहा है। किसान आंदोलन शुरू से ... और उसमें शरद जोशी भी हैं। महेन्द्र टिकैत भी हैं। नंजुन्दस्वामी भी हैं। गुजरात वाले भी हैं। उड़ीसा वाले भी हैं .. सब ... सबको जोड़ करके अगर देखा जाएगा किसी एक की बात लास्ट वर्ड न माना जाए उसमें। तो इस पूरे किसान आंदोलन में जो जिस किस्म की कॉन्शसनेस है, वह हम कह रहे हैं कि उसको स्वराज कॉन्सेसनेस का नाम दिया जा सकता है। क्या ये स्वराज कॉन्शसनेस ... प्री-ब्रिटिश इंडिया में यह ... ब्रिटिश इंडिया की बात मत कीजिए ... उससे कोई फायदा नहीं होने वाला है क्योंकि ब्रिटिश इंडिया को

किसान ... किसान कुछ कर ही नहीं रहा है, केवल रिसीविंग एंड पर है ... उससे जो करा लिया जा रहा है वह हो रहा है। और वह नहीं कर रहा है, ... तो उसको मार डाल रहे हैं। यही है ब्रिटिश इंडिया का। ब्रिटिश इंडिया के पहले जो फिस्कल सिस्टम है, क्या वो उसी किस्म की फिनांशियल स्ट्रेंथ्स की रिलेशनशिप्स प्रोजेक्ट्स कर रहा है सोसाइटी में जो किसान आंदोलन पिछले तीस चालीस साल का ... जिसकी किसान आंदोलन मांग कर रहा है। किसान आंदोलन की मांगों के हिसाब से एक फिनांशियल स्ट्रेंथ्स ऑफ डिफरेंट सेक्शन्स ऑफ सोसाइटी की आपसी संबंधों का एक नजारा तैयार होता है। एक मैप तैयार होता है उससे कि डिफरेंट सेक्शन्स की फिनांशियल कैपेसिटीज किस तरह बनेंगी अगर किसान आंदोलन की डिमांड मानी जाएगी तो ... वो लोकल मार्केट में एक्टिविटी बढ़ जाएगी तो छोटे दुकानदारों की ताकत बढ़ जाएगी। यह सबका हिसाब लगा करके अगर किसान आंदोलन की जो मांगे रही हैं बड़ी मांग जैसे डेट रिलीफ के हैं। एक्चुअली प्राइस की प्राइस है ... डेट रिलीफ है और कुछ हो सकती है। इनपुट्स के प्राइस कम करने की। मगर। इन सबके हिसाब से अगर देखा जाए अगर यह इंप्लीमेंट हुआ तो तो समाज के जो अलग अलग सेगमेंट हैं, लोकविद्या समाज के दूसरे प्रोफेशनल क्लासेस के उनके आपसी सम्बन्ध क्या होंगे ... सब्सिडी क्या होगी ... क्वांटिटेटिव एंड क्वालिटेटिव ... क्या भी ब्रिटिश इंडिया की फिस्कल पॉलिसी उस किस्म के संबंधों के संबंधों को लाने का प्रयास कर रही है? If that is the case then we have an example ... we have an example from Pre-British India about the financial relationship between different classes or different segments in society. And that the British ... that the farmers movement is demanding something which amounts to taking the nation towards the same kind of relationships. If that is the case ... if that is the case ... then both are governed by a Swaraj consciousness. This is what... this is what is being contended. ब्रिटिशर्स ने क्या किया और आजकी फिनांशियल पॉलिसी जो सरकार की है और उसके नतीजे क्या होते हैं उसकी बात हम नहीं कर रहे हैं ... जो बात जावांधिया जी कर रहे हैं उससे हमारी सहमति है ... लेकिन सवाल वो नहीं है ... सवाल क्या कर रही है सरकार इसके समझ जाने से नई पॉलिटिक्स नहीं बनती है ... से नई पॉलिटिक्स तो तब बनती है जब ... किसान की कॉन्शसनेस क्या है, बहुजन कि कॉन्शसनेस क्या है ... उस कॉन्शसनेस से कौनसी पॉलिटिकल इमेजिनेशन तैयार हो सकती है ... उस कॉन्शसनेस का pre-British India का... यानि हमारी traditions में कॉन्शसनेस रही है लोकविद्या समाजों की कॉन्शसनेस से उसका क्या रिश्ता है इससे तय होगा कि कौनसी political imagination हम तैयार करेंगे। गवर्नमेंट पॉलिसी अभी क्या है? वह तो पचास साल से चल रही हो क्योंकि जवाहरलाल नेहरू समय से चल रही है, और शास्त्री जी के समय शास्त्री जी को जितना भी जय जवान जय किसान क्या लिख लीजिये ... जितनी सेंट्रल अथॉरिटी बनी है, वह सब शास्त्री जी ... चाहे वह ब्लू रिवॉल्यूशन हो, चाहे वाइट रिवॉल्यूशन हो, चाहे इसका एग्रीकल्चरल प्राइस कमीशन हो, यह सब शास्त्री जी के समय की देन है ... जितना सेंट्रलाइजेशन शास्त्री के समय हुआ ... वह धोती पहन लेने से कुछ नहीं होता। आप जाइए पीछे देखिए ... कब हुआ यह सब? This is all between 65 and 67 after the death of Nehru ... All these central features ... central authorities were created... ये किसने क्रिएट की हैं? कांग्रेस ने क्रिएट की है और कांग्रेस के उस लीडरशिप ने क्रिएट की हैं जो बहुत ही पॉपुलर किस्म की लीडरशिप मानी गई। उनको पॉपुलर बनाया गया। A narrative was constructed around Lal Bahadur Shastri as if it was a different kind of narrative, It served the monopoly capital as much as Jawaharlal Nehru ... there is no difference between Nehru Policy and Lal Bahadur Shastri policy. कोई फरक नहीं है ... वही पॉलिसी चल रही है वही सेंट्रलाइजेशन है। वही किसान का उत्पीड़न है। यही वजह है ... जिसकी वजह से यह एक के बाद एक पार्टी बनती चली गई। रीजनल लेवल पर किसानों के नॉमिनेशन में सिक्सटी सेवन से सिक्सटी नाइन के बीच में यह सब शास्त्रीजी की पॉलिसी के तहत हुआ है। So, let us not be under any kind of impression कि कुछ बदलाव हो रहा था। कुछ कुछ नहीं हो रहा था ... वही हो रहा था जो जवाहरलाल नेहरू कर रहे थे, जहां accentuated form में हो रहा था ... much ... with much greater intensity during Lal Bahadur Shastri and later Mrs Gandhi time वाही हो रहा है और कुछ नहीं हो रहा है हम यह कह रहे हैं कि सारे प्रोसेस से किसान ने ऑफ्ट-आउट किया। अलग पार्टीज बनाई, अलग पॉलिटिक्स हुई, अलग मूवमेंट हुए ये सब कुछ हुआ

पैसठ से या सड़सठ से लेकर के वह चौरासी पचासी छियासी सत्तासी, अठासी नब्बे तक बीस साल में लगातार किसान ने अपने को एक्सप्रेस किया है in one way or another ...हम यह कह रहे हैं कि किसान के ये सारे एक्सप्रेसन जितने हैं। यह एक किस्म की स्वराज कॉन्शसनेस के चलते हुए ... क्या है ... वो नॉन कांग्रेसिज्म हो, चाहे वह लोकल पार्टीज का निर्माण हो ड्यूरिंग 67 and 69 चाहे जनता पार्टी में चरण सिंह की पोजीशन हो, चाहे बाद में इसका जनता दल और किसान आन्दोलन और बाद में भारतीय जनता दल ... इन सब में किसान ने जो अलग अलग ढंग से अपने को एक्सप्रेस किया है वो एक स्वराज कॉन्शसनेस का परिचायक है। वो हमें बताता है कि स्वराज कॉन्शसनेस इन रियलिटी क्या है? Forget about what very learned people will write about Swaraj and Swaraj consciousness किसानों की कॉन्शसनेस क्या थी ... मत कहिए स्वराज कॉन्शसनेस ... कहिए किसान कॉन्शसनेस क्या थी ये बताइए Is this Kisan consciousness similar to the nature of kisan consciousness in pre British India, which is exhibited in the fiscal system at that time and which is exhibited today in the demands of the Farmers' movement which entails a certain kind of monetary policy. We are not discussing monetary policy. Let us not get trapped into discussing the monetary policy of this country. उससे हमें कुछ लेना-देना नहीं है ... किसान आंदोलन किस किस्म की मॉनिटरी पॉलिसी की डिमांड कर रहा है इसको आर्टिक्युलेट करने की जरूरत है और फिर उसका क्या वही असर होगा समाज पर जो असर फिस्कल पॉलिसी का प्री-ब्रिटिश इंडिया में होता था ... this is the issue ... let us not get confused with government policy क्या है और क्या नहीं है और मॉनिटरिंग पॉलिसी क्या रही है और क्या नहीं रही है और उससे किन लोगों को प्रोफेशनल क्लासेज को कितना फायदा हुआ है और मार्केट में कैसे बिहेव किया We know that यह सब हो रहा है। बीस साल से वही हो रहा है और कुछ नहीं हो रहा है। So, all of us know what is happening. There is no point in discussing that We are a major agreement across board on these issues | It is not an economic issue, it is not a social issue alone. It is a question of the consciousness, the dominant consciousness or the not the dominant, the most wide spread consciousness in this country. Is it the bahujan consciousness, is it swaraj consciousness, is it kisan consciousness, is it lokavidya consciousness...? क्या यह सब more or less एक ही किस्म की कॉन्शसनेस है? If that is the case then there is a certain very clear arrow towards what kind of political imagination that we should be working towards and writing about this is what I am trying to say इसके ऊपर एक view चाहिए।

**Girish Sahasrabudhe:**

मैं ... जैसे उस समय यह बात ओपनली होती थी जब वो दाम की बात मेन डिमांड थी। और बहुत लोगों की थी जोशी जी तो यही एक डिमांड और बहुत लोगों के थी... लेकिन उसके साथ में यह कहा जाता था कि दाम हमको मिल जाते हैं तो हमको और कुछ नहीं चाहिए।

**Sunil Sahasrabudhey:**

ये जोशी की पोजीशन है। बाकी लोगों की नहीं है।

**Girish Sahasrabudhe:**

बाकी लोगों के नहीं हैं। लेकिन इनकी है और इनसे जब ये डिमांड होती थी तो वह उनका आर्ग्यूमेंट इकॉनमिक था पूरा लेकिन यह बात साथ में होती थी कि हमको और कुछ नहीं चाहिए यह हमको मिल जाता है तो हम अपना सब कुछ देख लेंगे ... अच्छा वो सब कुछ देख लेंगे भी ... उनके अपना आइडियाज थे... वो उनके क्या आइडियाज थे ये इम्पोर्टेंट नहीं है ... इंपॉर्टेंट यह है कि हम अपना सब देख सकते हैं। आप यहां से ये लूट बंद हो जाती है। दाम मिल

जाते हैं तो हम लोग अपनी अपनी जिंदगी हम लोग समझालेंगे... हम कर लेंगे क्या करना है ... यह जो इंडिकेटर है इसका यह कॉन्शसनेस का इंडिकेटर है ... तो वो है क्या एक्यूअली वैसा यह सवाल है ... जैसे उस समय के बारे में बात होती है यह सब जो रिपोर्ट्स है उसमें कई जगह अंग्रेजों ने ऐसा लिखा हुआ है कि ये जो सिस्टम चलती है यह एक दिन भी नहीं चलेगी अगर सब लोग इसके साथ नहीं होंगे तो ... मतलब जो लैंडहोल्डर्स हैं जो गाँव हैं पूरे देश में इस तरह उनके लोग ऐसी सिस्टम के पीछे खड़े हैं ... वह उसके साथ नहीं होंगे तो यह चल नहीं पाएगी। फिर उसमें तमाम तरह के करप्शन। यह वह चलेगा। फिर इस तरह की चीजें होंगी क्योंकि उसमें बहुत सी चीजें हैं। यह सर्वमान्यता से चल है। तो इससे चलती कि भाई ऐसा नहीं किया तो अच्छा नहीं है। ऐसा कुछ कॉन्शसनेस है तो ये बात उस टाइप के इसकी हो रही है कॉन्शसनेस की ... तो यह क्या है? इस तरह की कोई बात नहीं है। तो, यह क्या इस तरह जिस पर यह कहा जा सके कि भाई ये वर्तमान सिस्टम से त्रस्त कितने ही हो लेकिन वो कैसे चलाना है, यह जानते हैं, कुछ चीजें हो जाएं कुछ चीजें वो हथिया लें कुछ कर लें जो कर लें डिमांड्स के रूप में है सैटिस्फाई हो जाए तो क्योंकि वह चलाने का मतलब होता है कि बाकी के सब जो लोग हैं उनके साथ में उनके क्या संबंध बनाएंगे, इसके बारे में कुछ है उसका भी होना होगा ... कि वो कैसे चलेगा। तो ये ये जो चीज है ऐसा ऐसा कुछ देखा जा सकता है क्या? इस चीज़ के लिए क्या कहा जा सकता है? यह बात हो रही है।

### **Vijay jawandhia:**

नहीं, गिरीश थोड़ा सा मैं इसको सुनील ने जो कुछ कहा है ना ... मैं इसको इस तरह से देखता हूँ, कि सुनील ने लाल बहादुर शास्त्री के समय सब इंस्टीट्यूशन्स आए, यह सब उसी समय हुआ और इसमें और जवाहरलाल नेहरू के समय में कोई फर्क नहीं है। मगर ये बातें की। मुझे ऐसा लगता है कि थोड़ा हम जो फिस्कल मैनेजमेंट मनी सप्लाई की बात कर रहे हैं तो इसको थोड़ा इस तरह से देखना चाहिए कि कृषि मूल्य आयोग की स्थापना के बाद में क्या स्थिति थी? कृषि मूल्य आयोग की स्थापना के बाद में जो कृषि मूल्य आयोग के माध्यम से एक किसान को गारंटी दी गई... उस समय जो फसलों के दाम थे ... और उस समय जो सरकारी कर्मचारियों की वेतन थे और उस समय सोने के दाम क्या थे क्योंकि गोल स्टैंडर्ड था, उस समय तो उसके आसपास उसके बाद भी गोल्ड स्टैंडर्ड बंद हुआ है... तो इसका मेरे ख्याल से अध्ययन करने की जरूरत है और बाद में जो किसान संगठन तैयार हुए जो सुनील ने कहा, बिल्कुल सही है, मेरा मानना है कि इसीलिए तैयार हुए कि जो कुछ समानता लाने की कोशिश उस समय हुई कि किसानों ने प्रेरित उत्पादन बढ़ाना और उत्पादन बढ़ाने के बाद से उनका उत्पन्न उनका उत्पन्न उनके इनकम भी बढ़ने की गारंटी थोड़ी बहुत दी गई थी, उस समय... उसके बाद में जो इंदिरा गांधी का उन्होंने जिक्र किया... इंदिरा गांधी के समय से वो बहुत डिस्टर्ब होने लग गया उसका कारण ग्लोबल इकोनॉमी थी... पहला पेट्रोलियम क्राइसिस आया कि जिसने हरित क्रांति को मारा, हरित क्रांति के लूट को बढ़ाया, जिसमें सब इनपुट कॉस्ट ट्रेमेंडसली बन गई और इंदिरा गांधी ने उसके दबाव में उसकी ताकत से किसानों की आउटपुट प्राइस उस तुलना में नहीं बढ़ने दी... और वहां से डिस्पेरिटी शुरू हुई। मुझे ऐसा लगता है कि इसका अध्ययन करना होगा या मैं शायद गलत नहीं बोल रहा हूँ कि पंजाब में जो पहला असंतोष हुआ वह 73 के बाद में ही हुआ है ग्रीन रिवोल्यूशन का ...और फिर वो जहाँ जहाँ पर ग्रीन रिवोल्यूशन टेक्नोलॉजी को कैपिटल इंटेंसिव एग्रीकल्चर को किसानों ने यूज किया उनमें वह असंतोष ज्यादा भड़कने लगा और इस कारण देखो कि सत्तर से अस्सी ती तक के विदर्भ में भी कॉटन एकाधिकार योजना का फॉर्मेशन हुआ। पंजाब में आंदोलन हुआ। गुजरात में भी खेड़त समाज एक्टिव हुआ। केरल में भी एक्टिव हुआ। तमिलनाडु में हुआ। तो जहाँ जहाँ यह था ... तो मुझे ऐसा लगता है कि इसका भी अध्ययन करना होगा कि यह किस तरह से लूट बढ़ते गई और वेतन आयोग के हिसाब से मनी सप्लाई अर्बन एरिया में, इन्फ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से मनी अर्बन एरिया में, टेक्नोलॉजी के माध्यम से मनी सप्लाई अर्बन एरिया में ये सब बढ़ते गया और यह गैप बढ़ाते गया जिसको शेतकरी संघटना में शरद जोशी ने इंडिया और भारत का नाम दिया 1980 के समय ... और बाद में नब्बे-इक्कानाबे के बाद में तो इंडिया का सुपर इंडिया भारत का सोमालिया होने लग गया ... तो मुझे लगता है कि ये सब रिलेशन करना पड़ेगा और इसके मूल में अगर हम जाएंगे। लेकिन वो वही आते हैं कि जो ज्योतिबा फुले ने कहा था, कि गोरे अंग्रेज सरकार ने सरकारी कर्मचारियों की तनखाएं बढ़ाकर किसानों के

ऊपर नाना प्रकाशन कर लगाकर उनको पूरा कर्जे में डूब दिया है। या उन्होंने वो लिखा है सत्तानवे अस्सी में कि एक सोल्जर को पंद्रह रुपए भी महीने के नहीं पुरते हैं और दूसरी तरफ जो खेत में मेहनत करता है उसको दो या तीन रुपए महीना भी नहीं मिलता। तो इसको कैसे जोड़ेंगे? मुझे नहीं समझ में आ रहा है। मुझे लगता कि सब चीजों को जोड़ना पड़ेगा। तब कहीं जाके हम बात कर सकते हैं कि हमें क्या चाहिए ...

एक और चीज मैं कहता हूं कि जूना जाने दो ... तो भी मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैंने जब सत्तर इकहत्तर में खेती शुरू की तो उस समय भी गांव में पैसा कम था, और नोट नहीं थे पर अनाज का बार्टर सिस्टम था, फिफ्टी परसेंट वर्क जो है गांव का वह बार्टर में ही हो जाता था तो यह ज्वार में हो जाता था। तो एक प्रकार से उस समय मैं ऐसा करता था। उस समय भी कि जो किसान जवान ज्यादा पैदा करता है वो नोट छापता है। मुझे याद है कि बखर... बबूल का एक लकड़ा दे दिया। बड़ई को और उससे बखर बनवा लिया तो उसको सिर्फ आठ आठ पाइली ज्वार मतलब आठ किलो ज्वार देने पड़ती थी उसके मजदूरी के लिए ... या एक साल का एक बैल जोड़ी थी इसमें जो इंग्लीमेंट्स लगते हैं, उसका सिर्फ मेंटेनेंस के लिए उसको चौबीस किलो ज्वार या अनाज देना पड़ता था तो, क्योंकि रुपया नहीं था उस समय चलन नहीं था ज्यादा ... इन सबका भी अध्ययन करना पड़ेगा हमको यह सब निकाल कर लाना पड़ेगा। और आज वो कितना डिस्टॉर्ट हो गया है, इसके बारे में भी सोचना पड़ेगा ...

एक और चीज मैं बताता हूं। इतना ही नहीं तो फसल काटने के लिए भी से लिया जाता था। एक एकड़ ज्वार को काटने के लिए बड़े मुश्किल से दस किलो ज्वार, और दस किलो ... भुट्टे काटने के लिए ... अभी बीस किलो ज्वार में एक एकर काटना हो जाता है। आज दो किंटल ज्वार में कोई काम करने को तैयार नहीं है क्योंकि जिस तरह से ज्वार के दाम नहीं बढ़े उस तरह से मनी सप्लाई बढ़ गया है ... तो मुझे लगता है कि सिर्फ यह कहने से नहीं होगा कि लाल बहादुर शास्त्री के समय यह हुआ, मॉनिटरी सिस्टम की जो सिस्टम चलाने की जो पद्धति है उसमें जो कुछ थोड़ा पॉजिटिव बदलने की कोशिश की गई... वो कंटिन्यूटी में नहीं चला और फिर से वही अर्बनइजेशन, वही इंडस्ट्रियलाइजेशन और वही एक आर्गनाइज्ड सेक्टर को बनाने का काम जो हुआ है ... और वही this is now leading to neo-colonialism ... नहीं मुझे लगता है कि इसका भी थोड़ा विचार होना करना पड़ेगा। मुझे मालूम नहीं मैं सही बोल रहा हूँ या गलत बोल रहा हूँ तो मुझे लगता है कि ये सब चीजें एक साथ में देखनी होंगी।

### **Girish Sahasrabudhe:**

Yeah. Krish?

### **Krishnarajulu:**

I'll come to this, point on... monetary policy ... whatever is meant by monetary policy a little later. I read the transcript. of ... last week's meeting. ... I mean, it was largely about GSRK's talk about, the... what we call the fiscal system. in, pre-British India, with reference to... jingle Pit. Data, and so on. And, of course subsequently, the... article that, Dharmpal's, ... commentary on what you said earlier. Okay. ... I made some very general observations regarding that, fiscal policy pre-British India in my small note, on WhatsApp. I want to... essentially, talk about that especially in the light of... Buddha's comments towards the end of last meeting. You see... all of us are actually observers of what is going on in Bahujan Samaj ... our cognitive or cogitative framework is defined It's defined by our backgrounds, our education, whatever you want to call it. the... The goal posts or the benchmarks that define... all our concepts are within this... framework which is sort of predefined and from that framework, we are trying to look at... Bahujan, Bahuan Consciousness. Swaraj consciousness. Now this is the problem. Yes, the Dharmpal ji was also in the same... let's say, same situation. So was Mahatma Gandhi. They were all looking at Bahujan Samaj. Dharmpal

ji, sort of, made a great study of... what existed. In, ... with a vis-a-vis Bahujan Samaj, pre-British India, and all that. And from that, he seems to have tried to derive certain aspects of that Swaraj consciousness. And, ... set it out as a pointer, because when he talks about Story of India this is what I think he means. He means... can you say... something about Bahujan and Samaj, from the frame of... cogitative frame of Bahujan Samaj in the way that they see society, Swaraj what is their consciousness? I think Mahatma Gandhi... also did that. By attempting to free himself, and he did that to a large extent from this imposed consciousness to which, in my mind, all of us are captive to. Alright, so... how do we do it? As Buddhey pointed out in... towards the end of last meeting, all his comments, he says. There is no use. in trying to see... I mean. let us say the effort that organizations like PPST are all great efforts, but they're all trying to see how that situation fits into the goalposts, or the benchmarks, of this frame of reference, let's say cogitative, cognitive frame. And you like to look at solutions. within that framework. Because when we talk about monetary policy, that's what we are saying. Some problems and we think the solution is in what we call monetary policy. Whoa! We've called it fiscal policy also, that's okay. These are all terms which are used to describe as I said, the relations between different sections of... society. These relations in this framework are not mediated or not influenced by any I think what we are trying to say is, we can't see any swaraj consciousness in that. Our commentary will not... actually result in Oh. you know. And another thing of a Swaraj consciousness. And what it calls for in terms of activity. That is, how Bahujan Samaj severally and as a whole, has to... tune itself to make its Swaraj consciousness, which we inherently believe is there, at least I do, and I think many of us also do. How can it flower? Alright, so... You see, I have... for the past few years, at least, I began to think that the way we look at things It's not going to lead us anywhere. We are observers. We can only look at data that is presented to us. And then, of course, we participated to a great extent in Rait Sangha, I mean, the Farmers Movement. with a view, in my view, in my opinion, to try to find out what are these elements of Swaraj consciousness that seemed to be thrown up by the farmer's movement. And then take lessons from that. You see, in passing, I'll just make a comment. You see, when Buddhey said that Sharad Joshi said that पूरा खून खराब हो गया है ... What it means to me, is that... वो पूरा धर्म-संकट हो गया बहुजन समाज में. वो खून जो बनता है the basic... the mechanism of transfer of... whatever it is, information right through the body. And I see and as I've stated, very explicitly, at least for the past couple of years, I've been thinking and saying things like this, that Bahujan Samaj is basically a Dharmic society. खून खराब हो गया तो धर्म खराब हो गया All right. उससे वो जो स्वराज कांशसनेस पनप रहा है वो संकट में पड गया Alright. How do we then see it? See, I thought that... This Sant Parampara, the people that we have been referring to as constituting the Sant Parampara. Not the very well-known ones, like, as I've been mentioning, Guru Gobind Singh, Basveeshwara, and these, but even, like, Kabir, and Narayan Guru, and... Gyaneshwar, whoever it is. And then later day, of course, we have, as... whether it's, Jotiba Fule, or... Mahatma Gandhi... Or, ... Vinoba Bhave, I mean, lots of other people. You see, they... were observers from within Bahujan so much. That is the difference. And what they said... Or commented upon, or... said, do this, do that, etc, etc. were prescriptions which would probably... allow this Swaraj consciousness within Bahujan Sumaj to flower to capture the imagination... what we call a new political imagination, the political imagination of Bahujan Samaj, so that it would liberate itself and the rest of maybe humanity from the crisis. And it's not a crisis merely of capitalism or pre-capitalist society. It is a thing that society has faced for thousands of years. And these problems arise because of the kinds of changes that take place and everything. They were the people who were commenting about it by being

observers from within Bahujan so much. They had a... they were operating in a different frame of mind. Unlike us. So, to my mind, the Sant Parampara gives us inputs in how to see these things. You can see monetary policy being enunciated by them in a... in a way, fiscal policy, and so on. The Chengalpett data, what I've read and what I commented about, is essentially saying that the whole management of life and activities, relations. Are not determined by as is done today, by market policies. A market that is external to Bahujan Samaj, in the sense, conceptually. Bahujan Samaj didn't see themselves as players in a market situation. We are all today players in a market situation. Our roles, our responses, everything are defined by this market situation. They were not. They never saw themselves as, you know buyers and sellers of goods and services or anything, nothing like that. There was mutual cooperation in order to, you know, you contribute what you can to fullest measure. (...?...?) And then society had a system, a way of saying that everybody was involved. And maybe that is the kind of concept of equality or justice that they had. So... I'm saying that... Sant Parampra over the times, and then what Mahatma Gandhi kept saying. Many a time, people said ये क्या है... ये कुछ बोल रहे हैं ... ये practical नहीं है ... ये बहुत idealist है ... But the people of India, in their millions listen to him. Because he was... actually, igniting that consciousness. So... You see, today's monetary policy or whatever you see ... post-independence, let's say, because before that, it was under the control of the British rulers it is entirely determined by the market. Nothing more than that. Capital accumulation should be a... it should take place in these sectors, and therefore money flow should be like this, resource allocation, economics, the allocation, budget allocation should be like this. It's all determined by the market. If you see yourself only as a market player. broadest sense. This is what you will do. If you don't see yourself Bahujan Samaj does not see itself as a market player in every sense of the word... that सब कुछ लेन-देन है ऐसा नहीं है... लेन-देन नहीं है ... सिर्फ ये है तो the society will collapse. It has to. So... monetary policies could all build. So, I'm... I'm saying that Yes. As Buddhay just pointed out, can we see... those elements of Swaraj consciousness in... Bahujan Samaj. Pre-British India? Certainly. But it still carries on. Maybe remnants of that. what we might have thought was very ideal. You see this business of, land rotation. Fertile land being rotated by the different members of that local society so that... no agriculturist, no farmer thinks that agriculture or farming is an unremunerative proposition which is what everyone is saying these days unremunitative because you don't have good landholding, or sufficient landholding, or whatever. But this business of rotation, what does it do? It removes that. That fact, too. There's no question of under-munerative. the whole... Village, or whatever it is, that collective, is operating with whatever land it has to make sure that everyone he's actively engaged in is practicing his knowledge his lokavidya. That is the... That is the Swaraj consciousness where each individual says मैं स्वराज हूँ ... स्वराज मुझमें है And Swaraj is my birthright then refers to me not as a political statement. Rather that ... मैं जो कर सकता हूँ मेरी लोकविद्या के अनुसार समाज मुझे करने दे दिया facilitate कर दिया ... And this is consciousness that... permeates through all of Bahujan Samaj. It did, to a large extent, from the Chengalpett data in pre-British India, obviously. And it... it's not only Chengalpett, probably it was there in... a large... large parts of this country. Even at the time of Mughal rule and things like that, from what reports that we gather. Yeah, the British rule changed all that. The centralization created a need for a fiscal policy and a monetary policy. Okay, so... Once you decide that that is what you will do, that you know how to run society and take it on the path of progress and development when you use up that authority, or that consciousness. Then you will centralize everything. But... one has to one needs to break from that. We need to listen to Bahujan Samaj. What are they saying? What is the farmers movement ...?

What is the farmers... you see, I told... I think I said this long ago, 1984. In fact, ... I think there was seminar in Rajghat where I talked about farmers in search of an identity. हम कौन हैं ... इस सामाजिक ढाँचे में हम कौन हैं ... You see, the point is that is what I... I mean, I was there with the Farmers Movement about... since 81, okay, with the Rait Sangha movement and in those 2-3 years, I found that they were continuously talking about this. Do we as farmers count for nothing? Is somebody listening to us? Who are we. You see, for us, I think when we talk about, Bahujan consciousness, Swaraj consciousness, it is important that we listen as much as possible and then... try to place ourselves in that framework and then... try to... think of what we would... or recognize what we would see as a new political imagination. Without that we would also have... We end up being... people who made a great effort sincere effort, no doubt. But it would all amount to nothing. The market system for the past... I would say, almost since the advent of industrial capitalism. You see, mercantile capitalism or mercantile, this thing, did not... alter... the Swaraj consciousness, to my mind, of Bahujan Samaj. All these traders came... I mean, they've been coming from, what, 200 to 500 BC to India. That did not affect... Indian society in any drastic way. उसका खून खराब नहीं हुआ उससे ... कौन आये चले गये ... बहुत सारे लोग आये Finally, the European fellows came. They were more rapacious than others. They lacked knowledge and wisdom. And they were... they behaved like barbarians. I mean, this is what I would say. The result is that Bahujan Consciousness, Swaraj Consciousness, took a... took a beating because... This market consciousness, the imperatives of a market and a growing industrial capitalism changed... changed the rules of the game, so to speak. I mean, put people into a quandary, actually. They didn't know what to do. Till, maybe... Mahatma Gandhi came around and said, wake up, you're on the wrong thing. His Hind Swaraj is all about that, actually. At least to my mind. But, you see, there was a political question there that you have to dislodge this central authority. In order to be able to even get something, so that the political action, that is, this whole independence movement, became primary. There's a lot of confusion ... so-called great patriots, you know, Subhash Chandra Bose, or even Sardar Patel and all. They were sold off to this capitalist... what is this? dialogue, or whatever you call it conception. They failed to recognize. this faraj consciousness that was there, and which sustained Bahujan Sumaj, all those years. Every sense. Economically, publicly, socially, everywhere. It's not that there are no problems, I'm not saying that at all. There are hundreds of problems, and they've been tackled through the ages. That's what the Sant Parampra kept doing. Telling you how to tackle the problems. Social, economic, this and that. But they got sold out onto the other thing. Patriots are not over. But running down the wrong path. And that went on with Nehru and Company. So there's nothing. There's no one who can steer them out. I mean, it's still... the Indian... Indian... current Indian politics or something, away from that. The farmers' movement, or the movement in Bahujan Samaj, can probably do that. If they recognize their own strength. And become conscious. Conscious of what they have... what has kept them... sustained them? For this many. I mean... Without being exaggerated, a few thousands of years. be very stable. Society. I don't know what we do. We've been invaded, we've been ruled. By people who came outside this subcontinent, etc, etc. That's okay. So... I think this is, important. I don't... I mean, things like this Chengalpett data, Dharampal ji's observations ... they're all very useful. You know, in trying to do this, but... you know, in this, Bahujan... Swaraj Panchayat, I think... We should have a lot of, people from Bahujan, or wherever we can find them coming and talking. And such, you know, this GSRK's paper, or whatever it is, that can be... also circulated. People... should be made aware. What was the, let's call it monetary policy, fiscal policy, whatever you want to call it, then. Money flow, budget

allocation, resource control. I mean, look at the kind of... swaraj that exists in each of these activities. If, as, he said about that chap. Mr. Parthasarathi, or somebody who was sent to... attend those meetings and... where this land rotation was being discussed. what he says is that one day, the entire village was sitting under a tree ... everybody was involved. What better marker of Swaraj is there, then that ... that everyone is involved, that everyone is someone. Only this chap was left out, because he was no one, as far as that society was concerned ...

### **Girish Sahasrabudhe:**

Yeah, there are, ... similar ... similar things said here in this, .... the document which I sent, huh? This is a slightly different period 1800. So, about 30 years after, Chengalpett Data. 30... 25... 30... and, this is prepared in the context of you know, implementation of the permanent settlement system. So they are looking for, I mean, the kind of rights which exist. They want to be aware of the details, because they want to understand what kind of difficulties they'll face when they try to impose this permanent settlement. That is the context in which... but there are many details, and why I posted that was that last time GSRK discussed that in some detail. I had asked him about this rotation of lands business. So there, he said that there is the... that is when the story was recited. Now, what I found was that in this, there is some similar reference. They say that there are two types of... three types of villages, actually. Or rather, land tenures. One is Brahmin villages. The other set is Shudra villages. And the third is also Shudra, but they are much more numerous, actually. Lands ... lands which have... and there are differences in the holdings, I mean. So, in the Brahmin and these other villages, so I don't know what they are called, they are Pundarah, Vati, or something, that some Tamil term is there. The only difference is that they are non-Brahmins. the practices... of cultivation, of land holdings, of all other, you know, procedures of land transfers, rights, etc. They are all identical. In the two, types of villages. And the interesting thing I found was that they're also... they... see, they don't hold... they hold rights, which are measured in some, you know, there is some unit, which is not just acre, there is some unit. But that unit defines ... a sort of fraction of the total overall interest in the land. Okay. And it is not attached to a physical piece of land. It is attached to a right ... a proportion in the... in the gains, as well as in the losses. The same proportion. And that can be sold also. So if I hold 5 units, then I can sell 1, etc, etc. All that is there. The detailed procedures and etc. But the other point is that they intermittently hold lotteries. And this lottery... sort of, ... permutes these land holdings. Are the right-holdings. So... so... so the entire... I mean, it's a... the collective, sort of interest is enforced this way. So, the same rate will be there, it may move to some other part, etc. So, it's never attached to a physical piece, I mean, that's what I understood. And these things are similar. In both Brahmin as well as... and the others are simply called Shudra villages. And, ... Another interesting thing which is mentioned, I mean, which is that these transactions of rights. They ensure a complete mixing of different samaj's ... no discrimination between different, so-called castes and etc, as far as these are concerned. Except that they don't take place with... between Brahmins and Shudras. So, I mean, there are... so, one thing was that there were a lot of differences also from the kind of system described in the Chengalpett data. So, there's a lot of variety, but the common interests are there here also ... held in different ways. The other, the third type also, nobody could take away, they could not sell. No transactions, no sale transaction ... purchases the... so those lands were never purchased or sold. They were sort of occupied, or as the wastelands less productive, etc, etc. So... I mean, that... I found that in this archives, because I was looking for... GSRK said that these things

have all been, sort of... collected together by Dharampal, so I was just trying to see. Maybe there are more also. This is... this is something which I found almost immediately, so... Yeah, it is there as a doc, it is also there in the directory as a pdf in the... shared directory and the link is to Google Doc, so... GSR, have you seen that? Would you like to say anything about that?

**Sivaramakrishnan G:**

No, I haven't seen through all the material, though I am familiar with most of it in an earlier, kind of, I mean, without... before any questions ...

**Girish Sahasrabudhe:**

the document which I had posted.

**Sivaramakrishnan G:**

Yeah, yeah, I know, I know this, I know this has been, yeah. I know this, because this is... and it is not uniform. I mean, it varies from region to region. For instance, the Baramahal area, Baramahal is this present West Tamil land, Koimmbatur, Erode, Salem ... these areas. There were slightly different kind of systems, you know. And, I mean, it depends, you know, and it must have varied... obviously, it must have varied from region to region, but broadly, the elements are the same. there are rights, collective rights, that they have. I mean, sometimes the village, entire village pays the tax, not, individuals. And it is that they have shares, you know? It's the Panga, the word used, panga, is to be share, you know? What is your share in this village?

**Girish Sahasrabudhe:**

Correct, correct ...

**Sivaramakrishnan G:**

It's almost like a joint stock company, where you have shares, and you sell those shares, and... I mean, it would be too simplistic to put it like that, but then... I mean, it sounds very sophisticated arrangement, I mean, this kind of shares being transacted, etc. But the most important thing is that the cultivators were not evicted at any time, more or less. I mean, there must have been some exceptions. But those who had cultivation rights. they were not disturbed. I think this went on... you know, I could sell my share, but not... I mean, I can't remove the cultivator of the land. Now, who were these cultivators? Who are there? They were, as some later historians call them, as agristic slaves, etc. Whether they were independent or not. These are questions for which we have no clear answer. It all depends on how you want to look at them. I mean, you can call it agruistic slavery, you can call them as... People who had an absolute right over cultivation. Though they were not landowners in that sense, you know. It appears that nobody was actually an absolute owner of the land. Everybody... everyone kind of share. The share varied from function to function, person to person, group to group. It all depends on your role in that society, and therefore, you are given a... some share, may not be very... and the beauty is, even this most insignificant kind of activity. For instance, there is... in Chengalpettu, there are mentions of what you call this village... I mean, there are... there's nomadic people who come and entertain, ... I mean, these acrobats, etc, etc, who come and entertain villagers, from... they go... move from place to place. They are

not stationary anywhere. Even they are given a very small share in this, produce of the Changalpettu villages, 2,000 villages. I mean, it would be very small, but there is a share for these acrobats and gymnasts, etc, etc. Who do some entertainment for these villagers. And this is true of... and there are also, I mean, shares given to... I mean, our... what the Shingalpad data says, what is sent to far-off places. There is a Devadasi who is mentioned in several villages in this area. who must have been a very, very accomplished, I mean, person in terms of her... I mean, because she's known all over this place. She lives somewhere in Kumbakonam or somewhere, not in Changalpettu area. She is mentioned in at least 100 villages as somebody who is a recipient of a certain share of the produce of these villages. how this was sent to her, whether it was sent in the form of grains, whether it was sent in some other form, we have no idea. We have no idea how even the temples received this produce, whether they were all sent physically the produce. Sometimes it could have been done. But very far off places, I mean, let us say Thirupati Temple, or sometimes it is mentioned, even the Kashi Temple, or Rameswaram Temple, receives grants from these villages. Now, how is, the produce sent? It could be converted, maybe in terms of cash, or... I don't know how it was done. But this is a very, very fascinating, very complex arrangement. We have no idea of all the details, you know. But from whatever we know, it looks like a very sophisticated environment, not simple as, I mean, some share of produce, etc. It's very sophisticated.

**Girish Sahasrabudhe:**

I think that one of the important things for us is when we present this kind of an information to You know, people in the Bahujan Samaj, the farmers, the artisans, etc. ... what kind of ideas about cooperation does it trigger? I mean, do they come up with, ... what is the response which... see, to us, it... all of us, it looks as if... I mean, this is all unimplementable, so to say.

**Sivaramakrishnan G:**

I'm not even sure whether it's there in the memory of our people.

**Girish Sahasrabudhe:**

Yeah, yeah, but... but....

**Sivaramakrishnan G:**

I'm not even sure, because it would be as surprising to them as it is to us, because ... I don't know whether they... even the oldest residents of our villages today, who must be about 90 years, etc. would have any familiarity or any... they would not have even heard about it. I have a feeling they would not have, because some of these things have simply disappeared in a matter of 50, 70 years, so that nobody has heard about some of these things. It's very difficult, even if you interview very old respondents in villages. Unless you put their things in their mouth, and they would say, yeah, yeah, yeah, what you say is clear, right? I mean, you can get that kind of response, you know. You suggest to them that this was there, and they would not want to contradict you. They would say, yes, yes, yes, it was there. Yes, yes, yes, we must have had all this kind of thing. But they don't seem to have... these memories have faded completely, or... I don't know how it... I mean, we have not... and these are not recorded anywhere. It is only because of the Rampal's kind of effort, and it is through this archival research, he has been able to dig it out. And through British writings,

mostly, not from indigenous sources. Indigenous sources are almost non-existent. The only thing was the Changalpatu original Tamil data is available in the Tanjavar University, in the palm leaf manuscripts. And MD Srinivas and Bajaj and their entire effort has been able to unearth only some, 70, 80 villages data. Not all the 2,000, because much of it is lost. The palm leaves are unreadable. They have been... I mean, they have been eaten up. And therefore, when I saw that with MD, it was almost impossible for us to make out anything. And with great effort, they have been able to get out some 70, 80 village data, of which two big villages, they published recently, you know, the monographs. Complete data about these two villages. But not all the 2,000 villages are so. So this is the problem. We don't have these sources.

**Girish Sahasrabudhe:**

No, no, but I think that their response is an open question. I mean, in the sense that how they reconstruct this whole thing... I mean, it also depends on how we bring it out, but... and there is a need to think about how we do it, actually. But, ... The response, I think, is open. I mean, it is, ... If at all, what we are, attempting is something which carries some, some meaning ... then I think it is, proper to expect, some kind of an open-ended response. I mean, it is not going to be in terms of whether this can be done or not done in this manner. It may suggest various other kinds of things and trigger other kinds of stories from them. That may be... so... that remains open, I think.

**Sunil Sahasrabudhey:**

I have a question. After Krish spoke. One consequence, I don't know whether he agrees with this, ... one consequence, as I see it. of Krishnarajalu's contention should be... That we attempt a narrative. You see, there have been narratives that Dharampal provided, or that GSRK has already said, written and said, or DM and MD and Bajaj may have done, or some of these people do, who are the students of, who is that, Who is that Kanada Kuwempu scholar? Shanmukha and others, they are students of whom? What is his name?

**Sivaramakrishnan G:**

Bala Gangadhara.

**Sunil Sahasrabudhey:**

Gangadhara. You see, they... all these... narratives, all these ways of talking about those times and that data. Our ways of talking about, which with little finesse, would be, let us say, would be publishable in a social science journal. Yeah, to make a very kind of a broad statement. Can we write narratives of that period? Which will revolve around these Do we know people, story writers, GSRK? Do we know people or, story writers from Kannada land. Maybe, who have been connected with various different types of, people. But whose stories may be I mean, use this data, but... Speak about something which these scholars don't speak about. I mean, you can't write a story... a story is written by a story writer. Others don't write stories. We don't write stories. So, do you know story writers who may have known Bala Gangadhara, or who may have known Dharampal, or who know you. And have had a discussion with you on some of these questions. about... the Chengalpe data, or similar data of the 18th century. Where also maybe not just the economic data, the science and technology data from Dharampal's book. or the... or the data of physical resistance, resistances of various kinds, civil disobedience of various kinds that Mukundan lists

in Dharampal's book, centenary book. Do we know, are we friends with any story writers, those who write stories? Who can write stories about these periods. From a... stories in which the... the actors, the... The protagonists, what are they called? The main actors. The story revolves around a few people who are from the Bahujan Samaj. It is they who are doing something, it's they who are talking about the situation there. It is the females of that society, and so on. Do we know story writers who can do that? I mean, as Krishnarajulu said, we can write a... we can... We can write our interpretation of the same, which can also be publishable in the social science journal. Maybe as a dissenter's note or something, maybe that, and yet... The story would not find easily a publication somewhere. It will go as a story, in which the actors are those from the Bahujan Samaj. whether they were called the Shudra villages or whatever else they may have been called then, the story writer will not imitate that language. He will use a contemporary language because his stories need to be read by others. He's not trying to discover truth. He's trying to narrate... to write a narrative. We want people who write narratives, who don't discover truths in the past events. The truth is a tricky. We talked about it last time also. Maybe we can take this up in the next... in the next discussion, if the time.

**Girish Sahasrabudhe:**

Yeah, GSRK also has to leave, I think. Let us stop on that note. JSR also has to leave, he says, so it's already 6.30, actually, quite late. So... Let us leave on that note, and maybe we can continue with that.

**Sunil Sahasrabudhey:**

Yeah, yeah, we want... yes.